संस्कृत की प्रस्तुतता एवं उपाय

प्रो. डॉ. सुरवीरसिंह आई. ठाकोर
संस्कृत विभागाध्यक्ष,
आर्ट्स एंड कॉमर्स कालेज, ओलपाड, सुरत

संस्कृत अर्थात् वेद, पुराण, उपनिषद की भाषा, संस्कृत अर्थात् रामायण महाभारत की भाषा । संस्कृत अर्थात् रूपकों कंठस्थ करने की भाषा । संस्कृत का तात्पर्य कर्मकाण्ड और पूजा-पाठ । संस्कृत ब्राह्मणों की भाषा - ऐसी कई मिथ्या मान्यताएँ लोक मानस में दृढ़ हो गई है । ऐसी स्थिति का निर्माण होने के पीछे देखा जाय तो हमारे जैसे संस्कृत अनुरागी जनसमूह का मौन रहना, थोड़े बहुत अंशो से जिम्मेदार है, क्योंकि संस्कृत भाषा में छूपे बृहद् ज्ञान के बारे में न जानने वालों को न बताकर, मौन धारण करके उनका मिथ्या प्रलापन औरर मान्यताओं के साथ हम सहमत है, ऐसा सूचित होता है ।

भारतीय जनमानस को पश्चिम की संस्कृति और चीजों का पागलपन जैसा लगाव है। चिन्ता का विषय तो तब बनता है, जब हमाराशास्त्र, हमारा विज्ञान, हमारा आयुर्वेद, हमारा संशोधन विदेशीआचि अपने नाम चढ़ा दी है। ऐसे ही आंग्ल, ेन्च, जापानी जैसी विदेशी भाषा की बारीस हमारी देव भाषा संस्कृत को अपने बहाव में बहा ले जा रही है । हमारी संस्कृत भाषा को तो ग्रहण ही लग गया है । जैसे कि -

- संस्कृत बहुत कठिन भाषा है ।
- संस्कृत भाषा का युग बीत चूका है ।
- संस्कृत भाषा का पुनः स्थापन संभव नहीं है ।
- संस्कृत भाषा की आवश्यकता नहीं है ।
- संस्कृत भाषा अनिवार्यता नहीं है ।
- संस्कृत भाषा के बिना जीवन और लोक-व्यवहार संभव है ।
- संस्कृत DED लेंग्वेज है ।
- संस्कृत Old लेंग्वेज है ।

ऐसी मिथ्या मान्यताएँ जनमानस में दृढ़ीभूत हो चूकी है । उन मिथ्या ख्यालो को दूर करके, लोकमानस में संस्कृत भाषा 'सरलं, साध्यम्, अनिवार्यम्' है ऐसा भाव जागृत करना पड़ेगा ।

'सरलम्' भाव निर्माण करने के लिए भिन्न भिन्न प्रकार की योजनायें बना सकते हैं। जैसे छोटी-मोटी सभायें एवं सामाजिक कार्यक्रम का सुग्रथित आयोजन कर सकते हैं । बालगोष्ठि का आयोजन करके सरल संस्कृत भाषा में बोधकथायें, पहेलियाँ, गीत, महापुरुष के जीवन चरित्र से प्रेरणादायक प्रसंग को लेकर रसिक शैली में सुनाकर और प्रवर्तमान प्रवाह स्थिति की संस्कृत भाषा में सरल तरीके से बाते बताकर बाल्यावस्था से ही कुतूहल एवं रस-रुचि जागृत की जाती है ।

संस्कृत भाषा साध्य भी है । हमे मालूम है कि भारतीय भाषाओं में ५०-६० प्रतिशत शब्द संस्कृत में से आते हैं, तद्भव होते हैं । ऐसे भारत में जन्मे, बड़े हुए हर एक इन्सान में संस्कृत भाषा के संस्कार बीज होते ही है। संस्कृत कोई प्रादेशिक भाषा नहीं है । संस्कृत समग्र भारत देश की भाषा है । संस्कृत भाषा के प्रति समस्त भारतीय के हृदय में अपार आदर भाव तो है ही, जो संस्कृत भाषा के विकास के लिए प्रेरणा बल बन सकता है । ऐसे साध्य हो सकता है ।

राष्ट्र निर्माण में संस्कृत भाषा बहुत अनिवार्य तथा उपकारक है । नोबेल विजेता Dr. C. V. Raman believed that Sanskrit was the only language that could be the national language of India. He said, "Sanskrit flows through our blood. It is only Sanskrit that can establish the unity of the Country." संस्कृत આપણા લોહિમા વહે છે. સંસ્કૃત જ એક એવી ભાષા છે, જેણે આપણા રાષ્ટ્રમાં એકતા સ્થાપી છે. संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों में संग्रहित अनेक ज्ञान-विज्ञान के सिद्धांतो उजागर करके राष्ट्र के विकास में हस्तमाल कर सकते हैं । उदाहरण के तोर पे हम कह सकते हैं कि - हमारे अत्यंत प्रचलित आयुर्वेद में शरीर के सभी तरह के रोग का कारण और निवारण का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है । उन विज्ञान की प्रस्तुतता और विलायती दवाएँ से होता नुकशान आड असर - side effects) के बारे में जानकारी देकर हमारे राष्ट्र के जनसमुदाय को बहुत बड़े नुकशान से बचाकर राष्ट्र की सेवा कर सकते हैं । ऐसे अनेक शास्त्र और सिद्धांत विज्ञान है, जिसकी जानकारी प्रकाश में लाकर, लोकभोग्य भाषा में समजा कर संस्कृत भाषा के प्रति लोक जागृति लाकर भाषा के प्रति जिज्ञासा बढ़ाकर, भाषा के प्रति लगाव बढ़ाकर संस्कृत भाषा का प्रसार बढ़ा सकते हैं ।

महर्षि अरविन्द ने सच ही कहा है कि - "It is of the utmost value to a nation, a human group soul, to preserve its language and to make of it a strong and living cultural instrument. A nation, race or people which loses its language cannot live its whole life or its real life. (સંસ્કૃત ભાષા એ રાષ્ટ્રનું મૂલ્ય છે. માતવ સમૂહની આત્મા છે. ભાષાને જાળવવી, તેને મજબૂત બનાવવી અને જીવંત સાંસ્કૃતિા સાધન બનાવવું તે રાષ્ટ્ર, જાતિ અથવા લોકો તેની ભાષાને ગુમાવે છે, તેઓ તેમનું સંપૂર્ણ જીવન અથવા સાચું જીવન જીવી શકતા નથી.)

हमें प्राचीन-अर्वाचीन, पूर्व-पश्चिम की संस्कृति, साहित्य, शास्त्रो, विज्ञान और वर्तमान टेक्नोलॉजी के संदर्भ में संशोधन, अध्ययन, अध्यापन को ज्यादा प्रोत्साहित करके, तुलनात्मक कार्य करने से संस्कृत भाषा में एक नया सा संचार करना होगा । संस्कृत का जहाँ अध्ययन कराया जाता है वैसे विद्यालय, महाविद्यालय में अर्वाचीन विषय को लेकर चर्चा, वार्तालाप, गोष्ठी, व्याख्यान का आयोजन सरल संस्कृत भाषा में करके विद्यालय, महाविद्यालय का माहोल संस्कृतमय बना सकते हैं ।

हमारी ओर थोड़ा झाँखे तो २५०० साल पहले लिखा गया, ४००० सायन्टीफिक सूत्रों का जिनमें समावेश हुआ है ऐसा पाणिनिका 'अष्टाध्यायी' व्याकरण के क्षेत्र में 'मास्टरपीश' है । इन ग्रंथ की विशेषता को अच्छे तरीके से बता सकते हैं । हमें मालूम है कि NASA ने भी संस्कृत भाषा को कम्प्यूटर की सक्षम आदर्श भाषा के रूप में स्वीकृति दी है और यह हमारा अनुभव भी है । इसका कारण यह है कि संस्कृत भाषा में कर्ता, कर्म, क्रियापद का क्रम बदल ने से अर्थ में कोई बदलाव आता नहीं है ।

Let us take as an exampal a very simple sentence in English - 'The small boy hit the red ball with his bat. If the words are rearranged as - The small ball hit the red boy with his bat. or as - The red bat hit the small ball with the boy. अंग्रेजी में क्रम बदलने से हम जो कहना चाहते हैं उससे उल्टा हो जाता है । लेकिन संस्कृत में - लघुः बालकः दण्डेन रक्तं कन्दुकं प्रहृतवान् । -

लघुः कन्दुकं दण्डेन रक्तं बालकः प्रहृतवान् । – रक्तें दण्डेन लघुः कन्दुकं प्रहृतवान बालकः । They all mean the same thing.

'माहेश्वराणि सूत्र' में वर्णो का एक Compact स्वरूप है । आज कल हम सीडी का इस्तमाल ज्यादा करते हैं।) इसके आधार पर संस्कृत भाषा को कम्प्यूटर संगणक यंत्र) की भाषा स्वीकार करने के लिए निश्चित योजना से जनजागृति लाने का अभियान चलाकर भाषा की उपयोगिता और आवश्यकता सिद्ध कर सकते हैं।

Science, Medical Science, Engineering, Management or I.I.T., I.I.M. जैसी एज्युकेशनल इन्स्टीट्यूट के छात्रों को संस्कृत भाषा में छपे ज्ञान के भंडारो से अवगत करके, साथ में संस्कृत संभाषण के सांध्य वर्गो का आयोजन कर सकते हैं ।

हमारे देश में और विदेश में संस्कृत का चाहक वर्ग बहुत बड़ी तादात में है, लेकिन यह चाहक वर्ग परस्पर संपर्क में कम रहते हैं । ऐसे संस्कृत प्रेमीओं का संपर्क सेतु बने और बने रहने के लिए मिलन समारंभ के माध्यम से संस्कृत साहित्य, पत्रिका, सीडी इत्यादि के आदान-प्रदान से, पत्र व्यवहार के माध्यम से परस्पर संपर्क जाल नेटवर्क) स्थापित कर सकते हैं । २१मी शताप्दी में ज्ञान का विस्फोट हुआ है । आबाल वृद्ध में नयी चेतना का संचार हुआ है । प्रवर्तमान समय में समस्त विश्व का मानवी ज्ञान की विपुल मात्रा में भुखा और ज्ञानपिपासु दिखाई पड़ता है । नयी नयी टेक्नोलॉजी का विकास हो रहा है । ज्ञान की नयी नयी दिशाएँ खूल रही है । यदि हम यह विकसती हुई नई टेक्नोलॉजी के साथ कदम मिलाऐंगे तो हमारा अस्तित्व मुश्किल में पड़ सकता है । इसलिए टीवी, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, फेसबुक और ऐसी डीजीटल टेकनोलॉजी का सम्यक् इस्तमाल करके, संस्कृत भाषा का प्रचार-प्रसार करना पड़ेगा । इस तरह भी हम हमारी भाषा एवं शास्त्र का डेवल्पमेन्ट और प्रिझरवेशन कर सकते हैं ।

संस्कृत के प्रचार के लिए सूत्रो, सुभाषित स्टीकर संश्लेषकाणि), ध्वनिमुद्रिका सीडी), शुभेच्छा संदेश, पत्र इत्यादि का आधार ले सकते हैं ।

हमारे रोजबरोज के व्यवहार में संस्कृत भाषा का व्यवहारिक भाषा में इस्तमाल कर सकते हैं । जैसे कि – अत्र आगच्छतु, जलं ददातु पर्याप्तम् इत्यादि । ऐसे लघु यत्न करने से बहुत बड़ी सफलता प्राप्त हो सकती है। जैसे एक एक कंकर से सेतु और बुंद बुंद से सरोवर और ऐसे ही करके संस्कृत की 'पोठी-पंडितो की भाषा' को दूर कर पाऐंगे ।

विशेषता

- संस्कृतभाषा, साहित्य एवं विभिन्न शास्त्रो तत्त्वतः मनुष्य जीवन को मूल्याभिमुख करने के उदात्त ध्येय को वरे होने का स्वयं सिद्ध है ।
- सांस्कृतिक मूल्य संस्कृत भाषा-साहित्य की देन है ।यह भाषा भारतीय संस्कृति की भाषा है । संस्कृति मानवीय वर्तन को उजागर करने का एक महत्त्वपूर्ण परिबल है ।
- संस्कृत के छात्र, अभ्यास रसिक बनते हैं । भाषा का सौन्दर्य, शब्दार्थ का सौन्दर्य, आत्मसात करने की क्षमता प्राप्त करते हैं ।
- मनुष्य धर्म संस्कृत के अध्ययन में से प्राप्त होता महान मूल्य है ।
- संस्कृत वा मय के अभ्यास से व्यक्ति में आचार शुद्धि की भावना उजागर होती है और आचारः प्रथमो धर्मः – आचार पाया का धर्म है । आचरण के प्रबल अमलीकरण से समाज उत्कर्ष होता है, क्योंकि

मानवीय आचार शुद्धि से ही समाज शुद्ध और स्वच्छ होता है । ऐसे समाज सुधारणा का कार्य अपने आप होता है, क्योंकि संस्कृत का अभ्यासी समाज सुधारणा की लय में ढलता नहीं है । वह आत्मा सुधारणा के महायज्ञ का चयन करता है ।

- संस्कृत वा मय में मनुष्य को समजकर, मनुष्य को मूल्य निर्धारित करने का दृष्टिकोण देखने को मिलता है।